

प्रिय रमा साहेब,

आपका पत्र मिला. बहुत बहुत धन्यवाद मुझे दिल्ली वाली नुमाईश में शामिल करने के लिये. आपसे मैं शमा भी चाहता हूँ कि मैं छायाचित्र भेजने में कुछ अधिक समय ले रहा हूँ. दरअसल चित्रों के छायाचित्र दो बार लिपे जा चुके हैं और अभी तक तसल्ली देने वाला कोई नहीं मिला. इस पत्र के साथ यह कुछ छायाचित्र भेज रहा हूँ. इस आशा के साथ कि आप इनका उपयोग मेरे भविष्य के लिपे मुझसे बेहतर करेंगे। इस बार द्विवार्षिकी के कार्यों में सारा काम मुझे अकेले ही करना पड़ा था. इस कारण मैं आपसे जी भरकर बातें भी नहीं कर पाया. किंतु आपने मेरा जो उत्साहवर्धन किया है वह मेरे लिये एक महत्वपूर्ण मोड़ है. उन दिनों मैं निराशा के दौर से गुजर रहा था. मुझे यह अहसास होने लगा था कि मेरे काम को समझना मुश्किल है या फिर मैं छेमतलब कर रहा हूँ. तारीफ़ तो सभी करते थे. इंदौर की नुमाईश असफल रही तो यह सब मुझे बहुत तकलीफ़ दे रहा था.

पुरस्कार के पीछे भागने की मेरी इच्छा कभी हुई नहीं। इशतिये अधिकांशतः मैं प्रतियोगिता प्रदर्शनी में भाग नहीं लेता हूँ। द्विवार्षिकी चुकी भारत भवन का आयोजन है अतः भाग लेना स्वाभाविक है फिर एक जो जनमानस स्वभाव है पुरस्कार कृतियों से प्रेरणा और ऊँचने का मातृ इस कारण मैं चाहता था पुरस्कार और वह मुझे आपसे मिला। द्विवार्षिकी पुरस्कार से बड़ा एक चित्रकार के लिये - जो संघर्ष कर रहा हो। इससे बड़ा पुरस्कार और क्या हो सकता है कि उसका चित्र आपने स्वीकार हो। सिर्फ इस कारण ने मेरे अंदर जो ऊर्जा पैदा की है, मेरे मृतप्रायः मन को जो शक्ति दी है। उसके लिये मैं आपका शुक्र-गुजार हूँ।

मैं अपना कार्य शुरू कर रहा हूँ और उसके लिये मैं फिलहाल सामग्री गुटाने में व्यस्त हूँ। बम्बई भी जाकर रंग आदि लाने हैं। अभी तो प्राउन पेपर पर ही कार्य शुरू करूँगा। आप भी कागज भेजने वाले हैं। उसके मिलने पर उनपर भी करना है साथ ही मैं कैनवास पर भी शुरू कर रहा हूँ और उम्मीद है अच्छे परिणाम सामने आयेंगे। आपका चित्र अभी भेजा नहीं है। पाँच तारीख को भोपाल से टुक रवाना होगा तो करीब सात अप्रैल तक बम्बई पहुँच जायेगा।

चित्रों के साथ ही मैं बम्बई भी जाऊंगा. यहाँ के साथ
 मैं बायोडारा व खुद का चित्र भी भेंट रहा हूँ. आशा
 है दिल्ली प्रदर्शनी के निमंत्रण के साथ अन्य महत्व-
 पूर्ण संदेश की भी.

आपका

आकेश

अखिलेश

द्वारा, भारत भवन

भोपाल, 462002.

भोपाल से 4 अप्रैल 1988 को.